AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

छत्तीसगढ़ी लोक–साहित्य में व्यंग्य

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉ. कुमुदिनी घतलहरे
सहायक प्राध्यापक (अतिथि) हिंदी विभाग,
साहित्य एवं भाषा अध्ययनशाला
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

छत्तीसगढ़ी लोक–साहित्य में व्यंग्य–चेतना एक चिर–परिचित विधा है। लोकगीतों, लोकगाथाओं, लोकोक्तियों में जन–सामान्य से जुड़े व्यंग्य–विनोद का चित्रण प्राप्त होता है। लोक–साहित्य लोकभूमि पर आधारित आदिम परंपरा को संरक्षित रखती है। छत्तीसगढ़ी में यह वाचिक परम्परा में उपलब्ध है और निरंतरता बनी हुई है। हास–परिहास मानव में सदैव उर्जा का संचार करती है।

मुख्य शब्द

छत्तीसगढ़, लोक–साहित्य, व्यंग्य, लोकगीत, हास–परिहास.

प्रस्तावना

जेठ की ताप के पश्चात् वर्षा की फुहार सुहावनी लगती है, उसी प्रकार शुष्क जीवन में जब व्यंग्य की फुहार पड़ती है, तब उससे उठने वाली सौंधी खुशबू हमें इससे सराबोर कर जाती है। व्यंग्य–चेतना आज के समय में इतनी प्रभावी है कि कहानी, नाटक, काव्य, उपन्यास सभी विधाओं में इसका प्रयोग हो रहा है। समाज में फैले हुए असंगतियों, भ्रष्टाचार, ढकोसला, खोखलापन आदि के खिलाफ विष उगल कर लोगों में जागरूकता का प्रसार करने में सहायक है।

छत्तीसगढ़ी लोक–साहित्य में व्यंग्य–चेतना एक चिर–परिचित विधा है। लोकगीतों, लोकगाथाओं, लोकोक्तियों में जन–सामान्य से जुड़े व्यंग्य–विनोद का चित्रण प्राप्त होता है। लोक–साहित्य लोकभूमि पर आधारित आदिम परंपरा को संरक्षित रखती है। ''लोक–साहित्य युग–युगान्तर का वह साहित्य है, जो मौखिक परंपरा से प्राप्त होती है, कंठानुकंठ प्रवाहित होती है और जिसके रचयिता का कोई अस्तित्व नहीं रह पाता..... समस्त लोक उसे अपनी ही रचना मानते हैं एवं उसका उपयोग सर्वथा मनोरंजन के लिए होता है।''[1]

लोक–साहित्य में व्यंग्य को आभा या आभा मारना कहा जाता है। यह छिपे हुए सत्य को उजागर करने वाला माध्यम है। समाज को सही दिशा दिखाकर उस पर चलने के लिए प्रेरित करता है।

छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में व्यंग्य

छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में हास्य–व्यंग्य का समावेश पुरातनकाल से ही होता रहा है। ग्राम्य–जीवन में पनपते प्रेम, घृणा, असमानता, मनोरंजन आदि के लिए हास्य की मधुर फुहार और व्यंग्य के कटाक्ष को लोकगीतों में वाणी प्राप्त हुई है। लोकगीतों में हास्य–व्यंग्य का चित्रण यहाँ प्रचलित विभिन्न संस्कार परंपरा में विनोदपूर्ण लगते हैं–

विवाह–गीतों में व्यंग्य

छत्तीसगढ़ में विवाह परंपरा का निर्वहन करते समय वर एवं वधू पक्ष द्वारा हास–परिहास का नैसर्गिक वातावरण निर्मित किया जाता है और विनोदपूर्ण 'गारी' दी जाती हैः

''अरछा जरगे, बरछा जरगे, जरगे गुर के पाग हो।
हाहो कहि के नहीं कहा, जरय तुंहर नाक हो।।''[2]

हे समधी जी गन्ने के खेत जल गए, गुड़ का पाग जल गया, आपने बाजे–गाजे, फौज–पटाखे की बात कहकर इंतजाम नहीं किया, आपकी नाक कट क्यों नहीं गई?

बारात आने में देर हो गई बेचारा दुल्हा गाली से न बच सकाः

''टोरंव डंडिया हो, टोरंव हो पलुकिया
देवंव छिनार के टूरा ल गारी हो।
अतका बेरा कैसे लगे रे तोला टूरा
मोर धियरी गए कुम्हलाय हो।।''[3]

ओ रे पुंश्चली के बेटे, मैं तुझे गाली दूँगी, तुझे इतनी देर क्यों लगी? मेरी दुलारी बिटिया कुम्हला गई है, अब तो पालकी, छत्र–चंवर सब तोड़ डालने का मन कर रहा है।

घराती–बाराती दोनों एक–दूसरे पर कीचड़ उछाल कर मजा लेते हैं, खिल्ली उड़ाते हैंः

''नंदिया तीर के करू करेला,
फरे झोत्था हरियाय हो।
समधी राजा ल डांड़ पर गे
अपन बहिनी बेचे ल जाय हो।।''[4]

नदी के किनारे हरे करेले का गुच्छा लगा था, समधी चुराने गए तो पकड़े गए, अब जुर्माना पटाने के लिए बहिन बेचने आ रहे हैं – शर्म नहीं आती।

''नदिया के तीन के पटवा भाजी
पट–पट, पट–पट करथे रे।
आये हे बरतिया मन हा
मट–मट, मट–मट करथे रे।।''

नदी के किनारे फैला पटवा भाजी पट–पट करता है, उसी के समान आए हुए बाराती मटमटा रहे हैं। इस प्रकार हास–परिहास के द्वारा वातावरण आनंदमय हो जाता है।

लोकोक्तियों में व्यंग्य

लोकोक्ति अर्थात् हाना अक्सर बातचीत के दौरान लोगों के जुबान पर आ जाती है। हाना में पूर्वजों का अनुभव–संसाार छिपा हुआ है। हर विषय–क्षेत्र से संबंधी हाना छत्तीसगढ़ी में होते हैं। व्यंग्य–चेतनापूर्ण लोकोक्ति का व्यवहारिक प्रयोग ग्रामीणजन द्वारा ज्यादातर किया जाता हैः

''उल्टा–पुल्टा भई संसारा, नाँऊ के मुड़ ला मूंड़े लोहारा।''
(संसार के नियम उल्टे हो गए हैं, नाई के सिर को लोहार मूंड़ता है।)
''साबर के चोरी करे, अऊ सूजी के दान दै।''
(बड़ी राशि के हेर–फेर उपरांत छोटी राशि दान करने वाले पर व्यंग्य है।)
''हाथी–घोड़ा बोहा गये, गधा पूछे कतका पानी।''
(शेखी बघारने वालों पर व्यंग्य है।)
''कुकुर के पूछी, जब रइही ते टेड़गे के टेड़गा।''

(बुरा आचरण करने वालों पर आक्षेप है कि वे कभी भी, किसी भी परिस्थिति में अपना आचरण नहीं बदल सकते।)

[5]

(व्यक्ति स्वार्थवश किसी से भी रिश्ता कायम कर लेता है और
स्वार्थ–पूर्ति पश्चात उसे पहचानने से भी इंकार कर देता है।)
''छी ! छी करै, अऊ छितका अकन खाय।''
(छी–छी करके टोकरी भर खा जाता है)

लोकगाथाओं में व्यंग्य

लोकगाथा, छत्तीसगढ़ी लोक–साहित्य की प्रमुख विधा है। ऐसी लंबी कहानी जो इतिहास सम्मत है व गेय है। जन–सामान्य में एक–दूसरे को मौखिक रूप से हस्तान्तरित होती है।

छत्तीसगढ़ी लोकगाथा 'भरथरी' में व्यंग्य

''गोदी सुन्ना हे राम
बालक नई हे दीदी
कहि कलपि–कलपि रानी रोवे वो रानी रोवे वो
बाई ए दे जी
घाट घठौंदा अउ तरिया
संगी जंवरिहा देख तो दीदी ताना मारत हे
बांझ कइथे दीदी
बोली बोली म ओ
तन छेदे दीदी
ए ही घुन्ना करेजा म लागे वो बहिनी
लागे वो बाई ए दे जी..... ।''[6]

राजा भरथरी की माता पवनरानी की संतान न हुई तो उन्हे बाँझ होने का ताना सुनना पड़ता था। व्यंग्य–बाण कलेजे को चीर देते हैं और व्यक्ति को आत्महत्या के सिवाय दूसरा राह नहीं दिखता।

'अहिमनरानी' में व्यंग्य

छत्तीसगढ़ी लोकगाथा 'अहिमनरानी' में अहिमन के नई साड़ी पहनने पर पति राजा वीरसिंह नाराज़ हो जाते हैं। उसे मायके पहुँचाने के बहाने से रास्ते में मार देते हैं। अहिमनरानी के व्यापारी भाई, जिन्होंने उसे नई साड़ी दी थी, उसकी दशा देखकर महादेव व पार्वती से प्रार्थना कर उसे जीवित कर लेते हैं। बहन को साथ लेकर भाई अपने घर की ओर चल पड़ता है और आगे अहिमन के ससुराल गाँव में पड़ाव डालता है। अहिमनरानी गेहूँ पीसने के बहाने अपने ससुराल चली जाती है, आधा आटा सास को देकर आधा तम्बू में लेकर आ जाती है। यह क्रम कुछ दिनों तक चलता रहा। वीरसिंह उसे पहचान नहीं पाता और उससे प्रभावित होकर उसके व्यापारी भाई के पास उसका हाथ माँगने चला जाता है। तब व्यापारी भाई व्यंग्य करता है कि– तुम्हारी आँख नहीं दिखती, तुम अपनी पत्नी को नहीं पहचान रहे हो। व्यंग्य ने राजा की आँखें खोल दी और उसे अपनी भूल का एहसास हुआः

''सुन ले व्यापारी मोर बात रे
कि तोर बहिनी ल मोर बर बिहा दे
पइसा अउ कौड़ी जतका लेबे ओतका देहंव
कि तोर बहिनी ल देबे बिहाय
व्यापारी ह एक दिन सुनय दूसर दिन सुनय
कि तोर आँखी नई दिखय
अपन मनखे ल तैं नइ चिन्हय

का होगे तुम्हर आँखी रे
अब तो व्यापारी देवय पठोई..... ।''[7]

पंडवानी में व्यंग्य

महाभारत का छत्तीसगढ़ी अनुवादी रूप पंडवानी है। इसमें अनेक प्रसंगों पर व्यंग्य दृष्टिगोचार होता है।

अपने–अपने पुत्र को राजा बनाने के लिए गांधारी और कुंती भगवान शिव की पूजा करने जाती हैं। शिवजी के कहे अनुसार कुंती प्रातःकाल गांधारी से पहले सुगंधित स्वर्ण–पुष्प शिव को चढ़ा देती है। गांधारी को इस बात का ज्ञान होने पर वह कुंती पर व्यंग्य करती है कि गरीब, अभागिन, कर्महीन स्वर्ण–पुष्प के लिए धन कहाँ से लाएगी?

''गांधारी कथे– कस वो, कुंती पूजा करके चल दिस का?
दासी कथे– मोला तो अइसने लागथे रानी।
गांधारी– हट रे चंडालिन नई तो, वो दुखहायी, करमछड़हिन कहाँ
के फूल पाही?''

इस प्रसंग में जब गांधारी सोने का हार शिवजी के गले में पहनाती है, तब भगवान उसके स्वर्ण–हार को 'लतका' कहकर संबोधित करते हैं। 'लतका' शब्द स्वर्ण–हार के लिए प्रयोग होना व्यंग्यात्मक उक्ति है, क्योंकि बैलों के गले में डाली जाने वाली लकड़ी की वजनी वस्तु जो अंग्रेजी के उल्टा 'वी' आकार की होती है, उसे लतका कहा जाता है:

''सोने के हार लेके गांधारी शंकर के मंदिर म पहुंचय भाई
शंकर के गला म पहिरावय लतका पहिरावथे
शंकर भगवान कहय मोर गांधारी निकाल ले बेटी मोर
कुंती ल बरदान दे डारे हौं, डबल बरदान दे डारे हौं।''[8]

राउत दोहों में व्यंग्य

वीरों की वीरता का भाव राउत दोहों में दिखता है, साथ–ही हास्य–व्यंग्य का भी समावेश होता है।

कलियुग की दो टूक व्याख्या, मानवीय नीति व धर्म के ह्रास पर राउत दोहों में व्यंग्य:

''सतयुग त्रेता अउ द्वापर धरती घलो बुढ़ागे
देउताधामी मन पथरा लहुटगे नीति धर्म गंवागे।''[9]

अधर्म का विस्तार, असत्य का बोलबाला और भूमि की अनुर्वरता से उपजी पीड़ा ही व्यंग्य है:

''अधरम बाढ़गे धरती म सत के ज्योति बुझागे।
ताकत घटगे पिरथिवी के बोय अन्न नाहिं जागे।।''[10]

अपने अस्तित्व का मान प्रत्येक मनुष्य, जाति, समाज व देश को गौरवान्वित कर देता है, किंतु सामाजिक मूल्यों का विघटन विक्षोभ के रूप में मुखरित होता है:

''कृष्ण राज म दूध–दही अऊ रामराज म घी।
ये जुग में चाहा मिलत हे फूंक–फूंक के पी।''[11]

कलात्मक ढंग से कहे गए दोहे में व्यंग्य और आनंद दोनों होते हैं:

''दार–भात रांधे चटनी पीसे कचूर के हो
घर म बांडी बछिया नइये घोड़ा चढ़े ससुर के हो।''[12]

निष्कर्ष

छत्तीसगढ़ी लोक–साहित्य में व्यंग्य–चेतना पुरातनकाल से ही मिलता है। व्यंग्य के द्वारा व्यक्ति को

आत्मचिंतन का अवसर प्रदान होता है। मनुष्य अपने दैनिक जीवन में व्यंग्य का प्रयोग करता रहता है। इसमें सच्चाई छुपा रहता है। यह किसी को कोसने के लिए नहीं वरन् उसे सद्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है। मनोरंजन, हास–परिहास के लिए भी व्यंग्य–विनोद किए जाते हैं। आडंबरों से आवरण उतारना, नैतिकता का पाठ पढ़ाना, जीवन–मूल्यों की रक्षा करना और जन–सामान्य के तनावपूर्ण जीवन को रसमय करना व्यंग्य का उद्देश्य है।

लोकजीवन में प्रचलित संस्कारों में व्यंग्य का प्रयोग जीवन को आनंदमय बनाता है। लोकगीतों में सहज उमंग–उल्लास है, जो मनोरंजन के साथ–साथ लोगों को करीब लाने का कार्य करता है। जीवन की अनुभूत सच्चाई लोकोक्ति अथवा हाना में है। पूर्वजों का बिना कागज–कलम के संचित ज्ञान हमें जीवन की सच्चाई से अवगत कराने में सहायक है। विनोदमय वातावरण निर्मित कर, हाना हमें सीख दे जाती है।

मौखिक रूप से पीढ़ी–दर–पीढ़ी आगे बढ़ती हुई लोकगाथाएँ जो गेय हैं, हमें हमारी संस्कृति से परिचय करवाती है। 'अहिमनरानी', पंडवानी, भरथरी, राउत दोहा आदि विधाओं में संचित व्यंग्य–चेतना यह अवगत करवाने में सफल है कि जीवन में किसी के द्वारा किया गया व्यंग्य व्यक्ति, समाज की दिशा और दशा बदल सकती है। सत्य से आत्मसात करवाती व्यंग्य का महत्व पुरातनकाल से वर्तमानकाल तक यथावत है।

आज यह अति आवश्यक है कि हम अपने लोक–साहित्य का संरक्षण करें ताकि भावी पीढ़ी भी अपनी संस्कृति से परिचित हो पाए और जब तक मानव–जीवन का अस्तित्व है, तब कि यह पीढ़ी–दर–पीढ़ी आगे बढ़ती रहे। सामाजिक–चेतना व लोक–साहित्य में सरल–सहज व्यंग्य कल और आज को समझने की दृष्टि से विशिष्ट है।

संदर्भ सूची

1. पाठक, विनय कुमार और जयश्री शुक्ला, हिंदी व्यंग्य–कर्म एवं समकालीन परिदृश्य, बिलासपुर, प्रयास प्रकाशन, 2002, पृ. 340।
2. वही, पृ. 342।
3. वही, पृ. 343।
4. वही, पृ. 343।
5. वही, पृ. 345।
6. सिन्हा, विजय कुमार, छत्तीसगढ़ी लोकगाथा–एक अध्ययन, वैभव प्रकाशन, रायपुर, छत्तीसगढ़, पृ. 531।
7. शुक्ल, दयाशंकर, छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य का अध्ययन, वैभव प्रकाशन, रायपुर, छत्तीसगढ़, पृ. 250।
8. निर्मलकर, बलदाऊ प्रसाद. महाभारत और छत्तीसगढ़ी लोकगाथा पंडवानी का तुलनात्मक अध्ययन, वैभव प्रकाशन, रायपुर, छत्तीसगढ़, पृ. 501, 434।
9. यादव, सोमनाथ. छत्तीसगढ़ के यदुवंशियों में प्रचलित लोकगीतों एवं लोकगाथाओं का सांस्कृतिक एवं साहित्यिक अनुशीलन, वैभव प्रकाशन, रायपुर, छत्तीसगढ़, पृ. 70।
10. वही, पृ. 70।
11. वही, पृ. 70।
12. वही, पृ. 70।

––==00==––